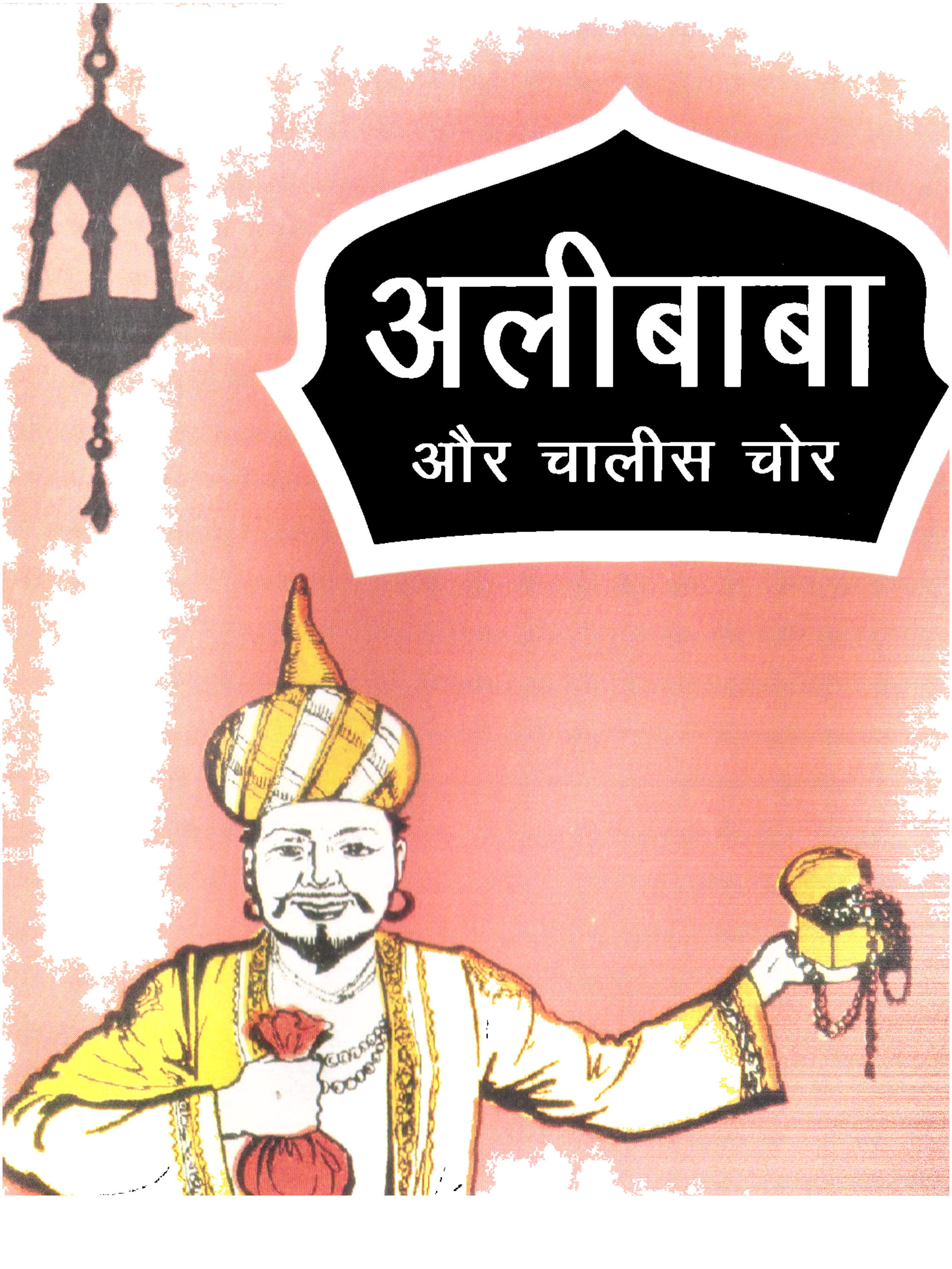
अलीबाबा
और चालीस चोर

अलीबाबा
और
चालीस चोर

जगदीश दीक्षित 'आनन्द'

रवीन्द्र प्रेस

मूल्य : तीस रुपये (Rs. 30.00)
संस्करण : 2009
© रवीन्द्र प्रेस
ISBN : 978-81-908018-5-0
ALIBABA AUR CHALIS CHOR (Story)
by Jagdish Dixit Anand

रवीन्द्र प्रेस, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110 006

चोरों की गुफा

दो भाई थे। एक का नाम कासिम था और दूसरे का नाम अलीबाबा। कासिम लोभी था और अलीबाबा धर्मात्मा। अलीबाबा गरीबों पर दया करता था। उनका पिता संसार से चल बसा था। मरते समय उसने अपना सारा धन दोनों भाइयों में बराबर बांट दिया था। चालाक कासिम ने मीठी-मीठी बातें बनाकर अलीबाबा का धन भी हथिया लिया था। अलीबाबा गरीब हो गया था, वह लकड़ियां बेचकर अपना पेट पालता था।

अलीबाबा का छोटा-सा परिवार था। घर में वह था, उसकी पत्नी थी और एक पुत्र था। पुत्र का नाम सलीम था। अलीबाबा के पास तीन गधे थे। वह उन्हें जंगल ले जाता, वहां दिन-भर लकड़ी काटता और गधों पर लादकर बाजार में बेच देता था। इस तरह कोई अधिक आमदनी तो न होती थी, पर जो मिल जाता, अलीबाबा उसी में सन्तोष कर लेता था।

एक दिन की बात है, अलीबाबा ने प्रातः समय तीनों गधों को साथ लिया और जंगल की ओर चल दिया। उसने

गधों को खुला छोड़ दिया। वे चरने लगे और अलीबाबा लकड़ियाँ काटने लगा। वह पेड़ पर से लकड़ियां काट-काट कर जमीन पर फेंक रहा था। थककर उसने माथे का पसीना पोंछा और सामने देखा दूर से उसे घोड़ों की टापों की आवाज सुनाई दी। उसे बड़ा अचरज हुआ। सामने से कई घुड़सवार घोड़ों को सरपट दौड़ाते हुए उसी की ओर आ रहे थे। उनके चेहरे डरावने थे और हाथों में तलवारें थीं। अलीबाबा उन्हें देखते ही डर से कांपने लगा। वे डाकू थे, गिनती में चालीस। उनका सरदार सबसे आगे था। बाकी सब उसके पीछे-पीछे आ रहे थे।

अलीबाबा ने लकड़ी काटना बन्द कर दिया। कुल्हाड़ी पेड़ पर ही टांक दी। वह भी पेड़ की घनी टहनियों में छिप गया। अब वह उन डाकुओं को देख सकता था, पर डाकू उसे नहीं देख सकते थे। अलीबाबा चुपचाप देखने लगा कि डाकू क्या करते हैं। कहां जाते हैं। इनके पास क्या-क्या सामान है। ये जंगल में क्यों आए हैं। चालीसों डाकू धीरे-धीरे उसी पेड़ के नीचे आकर ठहर गए जिस पर अलीबाबा बैठा था। पेड़ के पास ही एक बड़ी-सी चट्टान बिल्कुल सीधी थी। उस पर से न तो कोई उतर सकता था और न ही कोई चढ़ सकता था। डाकुओं का सरदार उसी चट्टान की ओर मुंह करके खड़ा हो गया और अपना हाथ उठाकर ऊँची आवाज में बोला ‘खुल जा सम सम !’

अलीबाबा को बहुत आश्चर्य हुआ। ‘खुल जा सम

सम' कहते ही उस चट्टान में से एक द्वार खुल गया। बारी-बारी से सारे डाकू उसी द्वार के अन्दर चले गए। अलीबाबा ने डाकुओं को ध्यान से देखा। उन सबके पास एक-एक थैला था। जरूर वे कहीं से सोने-चांदी की मुहरें

चुराकर लाए होंगे। थोड़ी देर बाद अलीबाबा को मोहरों की खनखनाहट भी सुनाई दी।

अलीबाबा सहमा-सा वृक्ष पर ही बैठा रहा। वह डाकुओं के बाहर आने की बाट देख रहा था। कुछ समय बाद द्वार खुला। बारी-बारी सभी डाकू बाहर आ गए। इस बार उनके हाथों में खाली थैले थे। डाकुओं के सरदार ने फिर से अपना हाथ उठाकर कहा 'बन्द हो जा सम सम!' गुफा का द्वार बन्द हो गया। जब सब डाकू उसकी आंखों से ओझल हो गए तो वह पेड़ पर से नीचे उतरा। अलीबाबा ने गधों को इकट्ठा किया। फिर द्वार के आगे जाकर डाकुओं के सरदार की भाँति जोर से कहा 'खुल जा सम सम !' पहले की तरह द्वार खुल गया।

गधों को साथ लेकर अलीबाबा गुफा के अन्दर गया। उसने सोचा था कि गुफा में अन्धकार होगा, पर वहां प्रकाश था। सारी गुफा सोने-चांदी के बर्तनों और हीरे-जवाहरातों से भरी थी। सड़क पर बिखरे ठीकरों की तरह सोने की मोहरें जमीन पर बिखरी पड़ी थीं। पर अलीबाबा ने देर करना ठीक नहीं समझा। पास पड़े थैले उठा लिए। उसने अशर्फियों के छः थैले भरे और बाहर निकल आया। उन्हें गधों पर लादकर ऊपर से लकड़ी के गट्ठे रख दिए। लकड़ी के नीचे थैले छिप गए। तब उसने बाहर-आकर चट्टान की ओर मुँह किया और जोर से कहा 'बन्द हो जा सम सम!'

2

भेद खुल गया

गुफा का द्वार बन्द कर अलीबाबा ने सीधा घर का रास्ता पकड़ा। सूर्य डूब जाने के बाद वह घर पहुंचा। अलीबाबा उस दिन गधों को घर के भीतर ले गया। बाहर से उसने द्वार बन्द कर दिया। यह देखकर अलीबाबा की घरवाली ने पूछा आज गधों को घर के अन्दर क्यों ले आए? अभी से यह द्वार क्यों बन्द कर दिया?

अलीबाबा ने घरवाली की बात का कोई उत्तर न दिया। वह उसे गधों के पास ले गया और उन पर से लकड़ी के गट्ठे हटा दिए। घरवाली ने मोहरों के थैले देखे तो हैरान रह गई। अलीबाबा ने एक कोने में सारे थैले खाली कर दिए। अलीबाबा की घरवाली का दिल खुशी से उछलने लगा। वह उन सोने की मोहरों को गिनने बैठ गई। अलीबाबा हंसते हुए बोला पगली! इन्हें गिनेगी तो गिनते-गिनते बूढ़ी हो जाएगी। इन्हें तो ऐसे ही उठाकर बाग में गाड़ दे।

घरवाली न मानी। बोली गिनती न सही, इनका

कुछ न कुछ हिसाब तो होना ही चाहिए। चलो, तोल लें। मैं पड़ोस से तराजू मांग लाती हूँ।

अलीबाबा ने मना किया, पर वह न मानी। हारकर अलीबाबा चुप हो गया। पड़ोस में कासिम का घर था। जब अलीबाबा की घरवाली को कुछ और न सूझा तो वह कासिम के घर में ही चली गई। कासिम की पत्नी बहुत चालाक थी। अलीबाबा से वह मन-ही-मन जला करती थी। अलीबाबा को गरीबी में सुख मिलता था। वह नहीं चाहती थी कि अलीबाबा उससे अधिक सुखी हो जाए। वह अलीबाबा के घर का रत्ती-रत्ती भर पता रखती थी। तराजू का नाम सुनते ही उसने पूछा बहन! आज क्या तोल रही हो, जो तराजू की जरूरत पड़ गई?

अलीबाबा की घरवाली ने उत्तर देने में आनाकानी की। कासिम की चालाक पत्नी ने चुपके से तराजू के नीचे मोम लगा दिया। उसने सोचा था कि जो चीज तोली जाएगी वह इस मोम में भी चिपक जाएगी। उसका विचार ठीक निकला। अलीबाबा की घरवाली मोम वाली तराजू ही ले गई। घर में उसने सोने की मोहरों को तोला और तराजू लौटा दी।

कासिम की पत्नी को आशा थी कि आज अलीबाबा के घर में गेहूं तोला जाएगा। उसने जब तराजू के नीचे का मोम देखा तो बहुत हैरान हुई। उसमें एक सोने की मोहर चिपकी थी। शाम को जब कासिम घर आया तो उसने

सारी की सारी कहानी पति को कह सुनाई। कासिम को विश्वास न हुआ। तब उसने सोने की मोहर लाकर दी। कासिम को पत्नी की बात पर विश्वास हो गया। वह जल-भुनकर राख हो गया। अलीबाबा की उन्नति वह नहीं देख सकता था। रात-भर यही सोचता रहा कि कैसे मोहरों के बारे में पता लगाया जाए।

अभी सूर्य उदय नहीं हुआ था। पक्षी भी नहीं जग पाए थे। सुबह-सुबह कासिम ने अलीबाबा का द्वार खटखटाया। कासिम लोभी तो था ही, अलीबाबा से अधिक चालाक भी था। वह अलीबाबा से मीठी-मीठी बातें करने लगा। चलते समय उसने भाई को गले लगाया। उसने अलीबाबा को भोजन करने के लिए घर आने का बुलावा भी दिया। अपने भाई कासिम में यह परिवर्तन देखकर अलीबाबा दंग रह गया। उसने न चाहते हुए भी मान लिया। दोपहर को जब अलीबाबा कासिम के घर जाने लगा तो उसकी घरवाली ने मना किया। अलीबाबा ने उसे धीरज बंधाया और भोजन करने कासिम के घर जा पहुँचा।

इस बार कासिम पहले से भी अधिक प्रेम से मिला। कासिम की पत्नी (अलीबाबा की भावज) तो उसकी बलाएं लेने लगी! भोजन में आज तरह-तरह के पकवान बने थे। ऐसा स्वादिष्ट भोजन अलीबाबा ने पहले कभी खाया ही न था। भोजन खा लेने के बाद कासिम ने अलीबाबा की पीठ पर प्यार से हाथ फेरा। फिर बोला   अली! एक बात बताओगे?

अलीबाबा भाई, पूछोगे भी। जो पूछो मैं वहीं बताऊंगा।

कासिम तुम्हें सोने की मोहरों का खजाना कहां से हाथ लग गया?

यह सुनना था कि अलीबाबा एक झटके के साथ खड़ा हो गया। कासिम को मोहरोंवाली बात मालूम है, यह जानकर वह दंग रह गया। वह विचारने लगा कि कासिम को यह बात कैसे मालूम हुई। अन्त में उसे कासिम से पूछना ही पड़ा। कासिम ने तराजूवाली सारी घटना कह सुनाई। साथ ही धमकी भी दी कि यदि खजाने का पता न बताएगा तो इसकी खबर पुलिस को दे दी जाएगी। पुलिस उसे कैद कर लेगी।

भोला अलीबाबा कासिम की बातों में आ गया। उसने डाकुओं का ठीक पता बता दिया। कासिम ने सारी बातें ध्यान से सुनीं। फिर वचन दिया कि वह यह भेद किसी के सामने नहीं खोलेगा। साथ ही वह जितना भी धन लाएगा उसका आधा हिस्सा अलीबाबा को देगा।

3

लालच बुरी बला है

लोभी कासिम ने पच्चीस-तीस गधे किराए पर लिए। बहुत-सी बोरियां ले लीं। वह एक टट्टू पर बैठा और

कुल्हाड़ी अपने कन्धे पर रखकर जंगल की ओर चल दिया। कुछ देर खोजने के बाद उसे वह गुफा मिल गई। वह द्वार के सामने खड़ा हुआ और हाथ ऊपर उठाकर बोला खुल जा सम सम! कासिम का बोलना था कि द्वार खुल गया। अपने गधों को गुफा के बाहर ही छोड़कर कासिम अन्दर गया। वहां का धन देखकर उसे और भी अचरज हुआ। वह जल्दी-जल्दी सोने-चांदी से बोरे भरने लगा। उसने बोरों के ढेर लगा लिए। सोने-चांदी के ढेरों को देखकर वह इतना प्रसन्न हुआ कि अपनी बुद्धि खो बैठा। आगा-पीछा सब कुछ भूल गया। द्वार खोलने के लिए उसने जो हाथ उठाया तो वह सम-सम शब्द भूल गया।

कासिम की दशा विचित्र थी! वह सम-सम शब्द भूल गया था और बिना सम-सम कहे द्वार नहीं खुलता था। उसे ध्यान आया कि 'खुल जा' के साथ किसी सब्जी का नाम था। बारी-बारी से उसने सभी सब्जियों के नाम ले डाले पर द्वार न खुला। तब उसने सोचा, सब्जियों में नहीं तो फलों में यह नाम अवश्य होगा। अब उसने बारी-बारी से सभी फलों के नाम बोले। द्वार तब भी न खुला !

कासिम सिर पीटने लगा और चीख-पुकार करने लगा। खुदा का नाम लेकर दया की भीख मांगने लगा। जब इससे भी कोई नतीजा न निकला तो उसने छिपने का विचार किया। वह छिपने के लिए जगह खोजने लगा। तभी गुफा के द्वार पर घोड़ों की टापें सुनाई दीं। कासिम के प्राण गले

में आ गए। डाकुओं के सरदार की आवाज सुनाई दी खुल जा सम सम।

थोड़ी-सी खड़खड़ाहट के साथ द्वार खुल गया। सरदार समेत सारे डाकू अन्दर आ गए। सोने की मोहरों और सोने-चांदी के बर्तनों से भरे बोरे वहां रखे थे। चारों ओर चुप्पी छा गई। डाकुओं का सरदार गरज उठा साथियो ! हमारे घर में भी कोई आ घुसा है। जरूर वह यहीं कहीं छिपा होगा।

डाकुओं ने म्यान से तलवारें निकाल लीं। यह देख कासिम के होश-हवास गुम हो गए। भय से उसका रोम-रोम कांपने लगा। दांत-दांतों से जकड़ गए। सांस जहां की तहां रुक गई। ऐसे ही समय तलवार की नोक से एक डाकू ने पर्दा हटाया। कासिम की उससे आँखें चार हुईं। हाथ जोड़कर, जमीन छूकर और गिड़गिड़ाकर कासिम उसकी मिन्नतें करने लगा। डाकू ने कासिम की बांह पकड़ कर उसे खींचा और सरदार के सामने जमीन पर फेंक दिया। कासिम को देखकर सरदार की आंखें लाल हो गईं। कासिम रोया, चीखा, चिल्लाया। उसने दुबारा उधर न आने की कसम खाई। इस पर भी डाकुओं के सरदार को उस पर दया न आई। उसने एक डाकू की ओर संकेत किया। डाकू ने मार-मारकर कासिम का कचूमर निकाल दिया। फिर गले में फंदा डालकर उसे लटका दिया। और उसके प्राण निकल गए।

डाकुओं ने उसे वैसा ही लटका रहने दिया, क्योंकि वे चाहते थे कि यदि कासिम का कोई दूसरा साथी हो तो इसकी दशा देखकर डर जाए और इधर आना-जाना बन्द कर दे।

4

मुस्तफा मोची का कमाल

दिन बीत गया, और रात हो गई, पर कासिम वापस घर न लौटा। उसकी पत्नी को चिन्ता सताने लगी। वह सीधी अलीबाबा के घर पहुंची। बोली अली! तुम्हारे भाई सुबह तुम्हारी बताई जगह पर गए थे। वे अभी तक वापस नहीं आए। क्या बात है? मेरा दिल बैठा जा रहा है। न जाने उनके साथ क्या बीती होगी ?

अलीबाबा बोला भाभी! कासिम बहुत चतुर है। वह सहज ही किसी के फन्दे में नहीं फंसने वाला है! वह दूसरों को धोखा दे सकता है पर धोखा खा नहीं सकता। वह आता ही होगा, आप चिन्ता न करें।

अलीबाबा के उत्तर से उसकी भाभी को धैर्य न हुआ। वह गुस्से में बोली तू अपने भाई का धन देखकर जलता है। तूने जान बूझकर उसे मुसीबत में फंसा दिया है। तूने

उसे मौत के मुंह मे धकेल दिया है। याद रख, मैं तेरी चालाकी और तेरे इस ढोंग का सारी बिरादरी के आगे भण्डा फोड़ूंगी। जैसे भी हो, मुझे मेरा पति लाकर दे। उसके बिना तो मैं जी भी न सकूंगी।

बेचारा अलीबाबा गहरे सोच में पड़ गया। उसने अब फिर से गुफा में जाने का विचार किया। उसे अपने भाई का पता लगाना था। अगले दिन सुबह के समय अलीबाबा ने कन्धे पर कुल्हाड़ी रखी, तीनों गधों को साथ लिया और कासिम की खोज में निकल पड़ा। गुफा के अन्दर कासिम की लाश टंगी हुई थी। लाश पर इतने घाव थे कि खोलते ही बिखर गई। और टुकड़े-टुकड़े हो गई। अलीबाबा ने उसे दो थैलों में भर लिया। बाकी चार थैलों को सोने की मुहरों से भरा और उन पर लकड़ियां रखकर घर की ओर वापस मुड़ चला। अपने भाई कासिम की मृत्यु का उसे बहुत दुःख था। सारे रास्ते वह रोता रहा। घर पहुंचकर उसने इस बार भी अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया। फिर अपनी भाभी को बुला भेजा। पति के टुकड़े-टुकड़े देखकर वह दहाड़ें मारकर रोने लगी। अलीबाबा ने उसे बहुत समझाया, पर वह चुप न होती थी।

कासिम की एक नौकरानी थी, जिसका नाम मर्जीनिया था। वह ईमानदार और चतुर लड़की थी। मालकिन का रोना-धोना सुनकर वह भी पहुंच गई। कासिम की लाश के टुकड़े-टुकड़े देखकर भय के मारे उसकी चीख निकल

गई। अलीबाबा ने उसे संभाला। कुछ समय सोच-विचारकर वह अलीबाबा से बोली मालिक! अब क्या किया जाए?

अलीबाबा ने मर्जीनिया को सारे का सारा किस्सा ज्यों का त्यों सुना दिया, फिर बोला मर्जीनिया! कासिम के मारे जाने की सूचना लोगों को न मिलनी चाहिए और न सरकार को! अगर ऐसा हो गया तो हम लोगों का सारा धन छिन जाएगा। डाकुओं को भी हमारा पता चल जाएगा। फिर हमारी भी वही दशा होगी जो कासिम की हुई है। इस लाश को इस तरह से दफनाना चाहिए कि किसी को कुछ भी पता न चले।

कुछ समय तक सभी सोचते रहे। अलीबाबा को जब कोई रास्ता न दीख पड़ा तो मर्जीनिया बोली मालिक! यह काम मैं पूरा करूंगी।

अलीबाबा और मर्जीनिया ने मिलकर सलाह की। तब वह एक अत्तार के पास गई। उससे उसने अपने मालिक कासिम की बीमारी का हाल कहा। उससे दवा ली और घर वापस आ गई। घंटे भर बाद वह फिर उसी हकीम के पास गई और दवा ले आई। रास्ते में जो भी आदमी उससे कासिम के बारे में पूछता, उसी से वह कासिम की बीमारी का हाल कह देती। कासिम अपने नगर में बहुत प्रसिद्ध था। उसकी बीमारी का हाल सुनकर लोग देखने के लिए आने लगे। चतुर मर्जीनिया ने इसका उपाय पहले से ही सोच रखा था। उसने सबको यह कहकर टाल दिया कि मालिक का जी घबराता है, वे किसी से मिलना नहीं चाहते। धीरे-धीरे कइयों को इस बात का पता चल गया

कि कासिम बीमार है।

रात होने से पहले मर्जीनिया ने हकीम से अन्तिम बार दवा ली। फिर वह मुस्तफा नाम के मोची के घर गई। मुस्तफा को वह पहले से ही जानती थी। उसकी हथेली पर

सोने की एक मोहर रखकर बोली आज घर चलकर थोड़ा काम करना होगा।

मुस्तफा तैयार हो गया। मर्जीनिया बोली ताऊ, एक शर्त भी है। चलते समय तुम्हारी आँखों पर पट्टी बांध दी जाएगी।

मुस्तफा घबराया। बोला तो क्या एक अशर्फी देकर तुम मेरा गला काटोगी? न बाबा, मैं नहीं चलता! लगता है तुम कोई टोना-टोटका कर रही हो। उसमें मेरी बलि दोगी। बाबा, मैं गरीब जरूर हूं पर अपनी जान मुझे भी प्यारी है। जाओ, जाओ किसी और का घर टटोलो।

मर्जीनिया यों टल जानेवाली न थी। उसे अपने मालिक का काम पूरा करना था। यदि यह काम न होता तो सबके प्राणों पर संकट था। मर्जीनिया ने मुस्तफा की हथेली पर एक मोहर और रखी। फिर बोली ताऊ! तुम कैसी बातें सोचते हो? किसी बूढ़े की जान लेकर हमें क्या करना है? तुम्हारे प्राण लेने से हमें क्या मिल जाएगा? मैं तो तुमसे एक जरूरी और गुप्त काम करवाना चाहती हूँ, आंखों पर पट्टी तो यूं ही बांध रही हूं। तुम डरो मत! मेरे साथ चलो। काम पूरा करने पर हमारे मालिक तुम्हें मालामाल कर देंगे। फिर इस बुढ़ापे में आगे का जीवन चैन से बीतेगा। कब तक जूते सीते रहोगे? अब तो आराम करने के दिन हैं। मैं चाहूँ तो किसी दूसरे मोची को भी ले जा सकती हूँ, पर तुम मेरे ताऊ हो न? बचपन से तुम्हें देखती आ रही हूँ,

इसलिए चाहती हूं कि यह मुफ्त का माल तुम्हें ही मिल जाए। तुम व्यर्थ ही डरते हो। भला तुम्हें मारूंगी? हाय, हाय, भला मैं यह काम कर सकती हूं?

मुस्तफा मर्जीनिया की भोली-भाली बातों में आ गया। मर्जीनिया ने उसकी आंखों पर पट्टी बांध दी। रास्ते में जो भी मुस्तफा की आंखों पर बंधी पट्टी के बारे में पूछता, मर्जीनिया आंखों की बीमारी का बहाना बना देती। रात को मुस्तफा मोची को लेकर मर्जीनिया घर पहुंची। आंखों की पट्टी खुली और मुस्तफा ने सामने पड़ी लाश के चार टुकड़े देखे। वह चीख मारकर एक ओर गिर पड़ा। मर्जीनिया ने उसे संभाला। फिर सोने की मोहरों की थैली दिखाते हुए बोली ताऊ, लाश के इन टुकड़ों को सी दो। यह काम पूरा कर दोगे तो तुम्हें यह थैली इनाम में मिलेगी।

थैली देखकर मुस्तफा का दिल उछलने लगा। लाश को सीना तो उसके बाएं हाथ का खेल था। इस छोटे-से काम के लिए इतने अधिक इनाम का उसने कभी सपना भी न देखा था। उसने सुआ और धागा उठाया और अपने काम में लग गया। चलते समय मर्जीनिया ने मुस्तफा को अशर्फियों की थैली दे दी। अगले दिन अलीबाबा ने सबके देखते-देखते कासिम की लाश को दफना दिया।

5

घर पर निशान

मुस्तफा को अचानक इतना धन मिल गया था कि वह घर बैठकर जीवन-भर खा सकता था। इसी पैसे से मकान बनवा सकता था। अब उसके लिए सब कुछ आसान था। इसलिए जूते बनाने का काम उसने छोड़ दिया और आराम का जीवन बिताने का विचार किया। वह बड़े-बड़े शराबघरों में जाकर पैसा खर्च करने लगा।

उधर जब डाकुओं ने गुफा में कासिम की लाश को न पाया तो सबको अचंभा हुआ। सरदार ने विचारा कि मरे हुए व्यक्ति का कोई न कोई साथी अवश्य है। उस व्यक्ति को अवश्य पकड़ना चाहिए। यदि न पकड़ा गया तो वह सारे डाकुओं को किसी भी समय पकड़वा देगा। पहले तो डाकुओं के सरदार को अपने साथियों पर सन्देह हुआ। हो सकता है, कोई उसका साथी ही भेदी बन गया हो। उसने सबकी परीक्षा ली। जब उसका सन्देह मिट गया तो उसने सब डाकुओं को इकट्ठा किया। फिर बोला साथियो! हमारे स्थान का किसी एक और आदमी को पता है। वही

लाश के टुकड़ों को उठा ले गया है। उस भेदी के कारण हम सबकी जान खतरे में है। उसको पकड़ना चाहिए। है कोई ऐसा बहादुर जो इस काम को पूरा करे?

कुछ समय तक सब चुप रहे। फिर एक डाकू अपने स्थान पर खड़ा हुआ। वह बोला सरदार यह काम मैं पूरा करूंगा। कल शाम तक उसका मैं पता लगाऊंगा।

सरदार वह बहुत चतुर है।

डाकू कोई चिन्ता नहीं।

सरदार वह बहादुर भी है।

डाकू मैं भी कायर नहीं हूं।

सरदार काम पूरा करके क्या इनाम लोगे?

डाकू यह मेरा अपना काम है! इनाम कैसा?

सरदार प्रसन्न हो गया। उसने इस डाकू की पीठ ठोकी और विदा किया। वह अपने साथियों में सबसे अधिक चतुर था। उसने सोचा, लाश चुराने वाला मोहरें भी चुराकर ले गया है। अब उसके पास बहुत धन हो गया है। धन अधिक हो जाने पर अक्सर लोग बुरे कामों में पड़ जाते हैं। जिसे मुफ्त का धन मिल जाता है, वह उसे व्यर्थ ही बहाया करता है।

खोजी डाकू शराबघरों और नाचघरों में घूमने लगा। एक शराबघर में मुस्तफा मोटा-सा मसनद लगाए बैठा था। डाकू मुस्तफा को पहचानता था। वह कई बार मुस्तफा से जूते ठीक करा चुका था। कल के भूखे को आज शाह बना देखकर उसे अचरज हुआ। उसने सोचा, यहाँ जरूर दाल

में काला है। वह मुस्तफा के पास गया। मुस्तफा भी अपने पुराने ग्राहक को पहचान गया। उसके पास इस समय खूब धन था, इसलिए उसने जी खोलकर डाकू का स्वागत किया। पास बैठकर डाकू ने पूछा मुस्तफा, यह रंग कैसे बदल गया? किस्मत का पासा कैसे पलट गया?

मुस्तफा शराब के नशे में बोला भाई, मैंने अपनी किस्मत सी ली है। जो लाश के टुकड़े सी सकता है, वह क्या किस्मत नहीं सी सकता?

इतना सुनना था कि डाकू का सन्देह बढ़ने लगा। थोड़ी देर में ही मुस्तफा को चेत आ गया। डाकू उसे एक ओर ले गया और उसकी हथेली पर एक सोने की अशर्फी रखकर बोला मुस्तफा मित्र! यह तो बताओ कि तुमने किसकी लाश के टुकड़े सिए थे?

एक अशर्फी अब मुस्तफा के लिए कुछ भी न थी। उस जैसी अशर्फियां अब उसके पास सैकड़ों थीं। वह भेद छिपाने लगा। मुस्तफा ने जब साफ-साफ मना कर दिया तो डाकू ने रास्ता बदल दिया। तेज चमकदार छुरा मुस्तफा की छाती पर चमक उठा। पैसे का लोभ न सही, मृत्यु से भय तो उसे लगता ही था। इस भय से उसने भेद खोलते हुए कहा मेरी आंखों पर पट्टी बांध दी गई थी। अब मुझे मार्ग का पता नहीं।

डाकू सोच-विचार में पड़ गया। फिर बोला कम-से-कम रास्तों के मोड़ का तो तुम्हें जरूर ध्यान होगा। तुम्हें जैसे

भी हो यह बताना पड़ेगा।

डाकू ने छाती पर रखे हुए छुरे को थोड़ा और दबाया। मुस्तफा चलने को राजी हो गया। कई बार कोशिश करने के बाद मुस्तफा ने विश्वास के साथ एक घर की ओर इशारा किया। डाकू ने आगे बढ़कर अलीबाबा के घर के द्वार पर खड़िया से निशान बना दिया। उसी समय वह भागकर गुफा में गया और अपने सरदार को सारी बातों की सूचना दे दी।

6

डाकू-सरदार भाग गया

मर्जीनिया प्रातःकाल बाजार से सामान लाने के लिए घर से निकली। द्वार खोलते ही उस पर लगे खड़िया के निशान की ओर उसका ध्यान गया। उसने उस निशान को मिटाया नहीं। डाकुओं को भ्रम में डालने के लिए उसने दूसरे कई मकानों पर वैसे ही निशान बना दिए, फिर वह अपने कामों में लग गई।

दिन ढल गया। रात होते ही डाकू-सरदार साथी डाकुओं को लेकर नगर में आया। मकान खोजते-खोजते वह उसी गली में आया। अभी वे गली में घुसे ही थे कि

उनकी दृष्टि मकान पर लगे निशान पर गई। उस समय सबको बहुत ही आश्चर्य हुआ। एक जैसे निशान कई मकानों के दरवाजों पर लगे थे। ऐसी दशा में डाकू किसे पकड़ते? हारकर वे वापस आ गए।

डाकू-सरदार इस हार से चिढ़ गया। ऐसे चालाक शत्रु को अवश्य मार डालना चाहिए। अब सरदार भी डरने लगा कि वह अपने साथियों सहित किसी भी समय पकड़ा जा सकता था। उसने प्रतिज्ञा की कि वह इस काम को आप ही करेगा। कुछ ही दिनों में सरदार ने अलीबाबा को मारने की योजना बना ली। उसने कई बार घूम-फिरकर अच्छी तरह अलीबाबा के घर को पहचान लिया। उसने इसका इतना अभ्यास किया कि उसे कभी धोखा न हो। एक रात उसने साथियों को अपनी योजना कह सुनाई। यह योजना सबको पसन्द आई। सरदार ने चालीस खच्चर मोल लिए। चालीस बड़े-बड़े तेल के कुप्पे भी बनवाए। ये कुप्पे इतने बड़े थे कि इसमें एक आदमी आसानी से बैठ सकता था। उन्तालीस डाकू उन उन्तालीस कुप्पे में अस्त्र-शस्त्र संभालकर बैठ गए। जो एक कुप्पा बाकी बचा उसमें तेल भर दिया। सब कुप्पों के मुंह पर बहुत-सा तेल लगा दिया, जिससे पता चले कि तेल छलका है। रात शुरू होते ही डाकू ने नगर के भीतर पैर रखा। नगर में घूमने-फिरने के बाद डाकू अलीबाबा के घर के आगे जा पहुंचे। डाकू-सरदार ने अलीबाबा को सलाम किया; फिर बोला श्रीमान्, मैं तेल

का व्यापारी हूं। इस नगर में मेरा कोई जान-पहचान का नहीं। आप मुझे आज रात के लिए अपने घर में ठहरने की जगह दे दें। आपकी बड़ी कृपा होगी।

अलीबाबा बड़ा दयालु था। उसने डाकू को रहने का स्थान दे दिया। साथ ही नौकर को आज्ञा दे दी कि मेहमान की सेवा की जाए। अलीबाबा ने डाकू-सरदार को अपने साथ भोजन करने के लिए बुलाया। उसे सोने-चांदी के बर्तनों में भोजन कराया। बहाना बनाकर डाकू-सरदार अपने स्थान से उठा। वह कुप्पों में बैठे डाकुओं के पास गया और बोला जब मैं कंकर फेकूं तो तुम सब कुप्पों से बाहर निकल आना और लूट-मार शुरू कर देना। उसी समय मैं अलीबाबा को मार डालूंगा।

सरदार अपने कमरे में सोने के लिए चला गया। अचानक ठीक उसी समय मर्जीनिया कुप्पों के पास से निकली। उसके पैरों की आहट सुनकर डाकुओं ने समझा कि सरदार आ गया है। एक डाकू बोला सरदार, समय हो गया? आपने अभी तक कंकर क्यों नहीं फेंका?

यह सुनना था कि मर्जीनिया के कान खड़े हो गए। चालाक मर्जीनिया ने उसी समय इसका उपाय सोच लिया। उन कुप्पों में एक तेल का भी कुप्पा था। मर्जीनिया ने उस तेल को कढ़ाई में खूब खौला दिया। फिर बारी-बारी से खौलता हुआ तेल सभी कुप्पों में डाल दिया। इस प्रकार सभी डाकू एक-एक करके मर गए। थोड़ी देर बाद समय

जानकर सरदार ने कंकर फेंकने शुरू किए पर उसे तब बड़ा अचरज हुआ जबकि डाकुओं ने कहे अनुसार कोई उत्तर नहीं दिया। सरदार ने समझा, उसके सब साथी सो गए हैं। वह उन्हें जगाने के लिए हर एक कुप्पे के पास गया। वहां हर एक साथी को मरा देखकर वह बहुत डर गया। उसकी योजना असफल हो गई थी।

ऐसे समय अपने प्राण बचाना ही ठीक था। उस समय डाकुओं के सरदार को कोई रास्ता न दीख पड़ा। जल्दी में वह बाग की दीवार कूदकर भाग गया। मर्जीनिया यह सब छिपकर देख रही थी। डाकू के भाग जाने पर वह बहुत प्रसन्न हुई। प्रातःकाल अपने मेहमान को घर में न पाकर अलीबाबा बड़ा चकित हुआ। तब मर्जीनिया उसे तेल के कुप्पों के पास ले गई। बारी-बारी से उसने सभी कुप्पे खोलकर दिखाए। हर कुप्पे में एक-एक मरा हुआ डाकू था। अलीबाबा को अब सारी बात समझ में आ गई। उसने मर्जीनिया की बहुत प्रशंसा की।

7

डाकू-सरदार मारा गया

डाकुओं का सरदार अकेला ही रह गया था। वह समझ गया था कि शत्रु बहुत चतुर है। इस पर भी उसने साहस

न छोड़ा। उसने बदला लेने का पूरा निश्चय किया। इस बार उसने एक और योजना बनाई। नगर की मण्डी में उसने एक दुकान किराए पर ले ली। वह अब रेशमी कपड़ों का व्यापारी बन गया। उसने अपना नाम हुसेन रख लिया। हुसेन के सामने ही सलीम की दुकान थी। सलीम भी कपड़े का व्यापारी था, यह दुकान कासिम की थी। कासिम के मरने के बाद अब अलीबाबा का बेटा सलीम ही उस दुकान को संभाल रहा था। हुसेन रात ही रात में गुफा से बढ़िया-बढ़िया रेशमी थान ले आया और उसने अपनी दुकान सजा ली। धीरे-धीरे उसने सलीम से मित्रता कर ली। दोनों आपस में पक्के मित्र बन गए।

एक दिन की बात है, सलीम अपनी दुकान पर बैठा था। अलीबाबा उस ओर निकला। उसने सलीम से बातें कीं। हुसेन अपनी दुकान पर बैठा देखता रहा। पूछने पर पता लगा कि सलीम अलीबाबा का बेटा है। अब तो हुसेन ने मित्रता और गहरी करनी शुरू कर दी। वह बिना सलीम के भोजन न करता था। नित्य वह सलीम को अपने घर ले जाता, वहां उसका बड़ा स्वागत करता।

सलीम की आंखों में भी हुसेन से बढ़कर कोई नेक मनुष्य न था। वह हर काम करने से पहले हुसेन की सलाह लेता। वह वही करता जो हुसेन कहता। एक दिन सलीम ने हुसेन को अपने घर दावत दी। इसके लिए उसने अलीबाबा से पूछा। अलीबाबा ने इसे प्रसन्नता से मान

लिया। सलीम के मित्र हुसेन के स्वागत के लिए तैयारी शुरू हो गई। जब हुसेन से यह बात कही गई तो पहले तो उसने टालमटोल की, पर फिर मान लिया।

रात का समय था। सलीम अपने मित्र हुसेन को आदर-सत्कार के साथ घर लाया। अलीबाबा ने हुसेन का दिल खोलकर स्वागत किया। थोड़ी-देर बाद अलीबाबा ने भोजन करने के लिए कहा। जब वह अपने आसन से उठ खड़ा हुआ। कारण पूछने पर बोला श्रीमान! मैं किसी के घर भोजन नहीं करता।

सलीम क्यों?

हुसेन मैं केवल अपने घर का नमक खाता हूं।

अलीबाबा बेटा! यह भी तो अपना ही घर है। यहां का नमक खाने में तुम्हें क्या हानि है? फिर यदि तुम्हें नमक नहीं खाना तो न सही। हम बिना नमक का भोजन ही पकवा देंगे। आज हम भी बिना नमक का ही भोजन करेंगे।

हुसेन को यह बात माननी पड़ी। अलीबाबा रसोईघर में गया और मर्जीनिया से बोला हमारा मेहमान बिना नमक का ही भोजन करेगा। अब तुम दूसरा भोजन बनाओ। किसी भी वस्तु में नमक न डालना।

मर्जीनिया पहले तो यह सुनते ही चकित रह गई, पर फिर उसने वैसा ही करने का वचन दिया। बिना नमक का भोजन पकाया। अलीबाबा, सलीम और हुसेन ने वही

भोजन किया। हुसेन सोच रहा था कि जब दोनों पिता-पुत्र शराब के नशे में अचेत हो जाएंगे तो मैं उन्हें मार डालूंगा। परन्तु इससे पहले एक और घटना हुई। मर्जीनिया ने नाचना शुरू कर दिया।

मर्जीनिया ने आज बहुत सुन्दर पोशाक पहन रखी थी। उसकी कमर में एक छोटी-सी पर तेज कटार थी। कटार की म्यान चांदी की थी और प्रकाश में खूब चमक रही थी। उसके साथ अब्दुल्ला नाम का नौकर था। अब्दुल्ला अलीबाबा का पुराना नौकर था। वह डफली बजा रहा था। मर्जीनिया का नाच इतना अच्छा था कि सबने उसकी प्रशंसा की। जब मर्जीनिया ने देखा कि अब हुसेन पर भी शराब का नशा चढ़ रहा है तो उसने नाच बन्द कर दिया और अपनी डफली अलीबाबा के आगे पसार दी। अलीबाबा ने प्रसन्न होकर उसमें एक अशर्फी रख दी। अब वह हुसेन के सामने गई। हुसेन उसे इनाम देने के लिए कमर से थैली निकालने लगा। तभी मर्जीनिया ने अपनी कटार से हुसेन पर भरपूर वार कर दिया। हुसेन दो क्षण छटपटाया और फिर मर गया।

यह देखकर अलीबाबा को बड़ा गुस्सा आया। हुसेन उसका मेहमान था। उसने मर्जीनिया से इसका कारण पूछा। वह बोली श्रीमान! यह कपड़े का व्यापारी हुसेन नहीं है, यह तो डाकुओं का सरदार है।

यह सुनकर अलीबाबा ने ध्यान से डाकू को देखा। अब तो वह भी पहचान गया। फिर उसने पूछा अच्छा मर्जीनिया, अब यह बताओ कि तुमने डाकू को पहचाना कैसे?

मर्जीनिया बोली श्रीमान्! यह डाकू अरब का रहनेवाला

है। अरब में मुसलमान जिसका नमक खा लेते हैं, उसके साथ कभी बुराई नहीं करते। जब इसने नमक खाने से मना किया तो मुझे इस पर सन्देह हो गया। ध्यान से देखने पर मैं इसे पहचान गई।

अलीबाबा मर्जीनिया की चतुराई पर बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने सलीम के साथ मर्जीनिया का विवाह कर दिया। उस दिन से एक वर्ष तक अलीबाबा गुफा के बाहर छिपकर आने-जानेवालों को देखता रहा। जब कोई दिखाई न दिया तो उसने यह भेद अपने पुत्र के सामने खोल दिया और उसे गुफा दिखा दी।

अलीबाबा के सब शत्रु मर गए। वह सुख से रहने लगा। उसका सबसे बड़ा गुण था कि वह गरीबों की सदा सहायता करता था। उसके द्वार से कभी कोई निराश नहीं लौटता था, इसलिए थोड़े ही दिनों में लोग उसकी देवता की तरह पूजा करने लगे।

❑ ❑ ❑

बहुरंगी बालोपयोगी कविताएँ

बन्दर बाँट	बच्चन
नीली चिड़िया	बच्चन
जन्मदिन की भेंट	बच्चन
निंदिया आ जा	अमृतलाल नागर
हुआ सवेरा उठो उठो	सोहनलाल द्विवेदी
हम बालवीर	सोहनलाल द्विवेदी
सुनो कहानी	सोहनलाल द्विवेदी
अगर-मगर	निरंकारदेव सेवक
आज़ादी के गीत	निरंकारदेव सेवक
चाचा नेहरू	विष्णुकांत पाण्डेय
आओ करें सवारी	रामचन्द्र तिवारी
अपना देश	रामचन्द्र तिवारी
खेलें कूदें नाचें गायें	धर्मपाल शास्त्री
फूल खिले हैं डाली-डाली	रुद्रदत मिश्र
यह धरती बलिदान की	राष्ट्रबंधु
कहावतों के गीत	रत्नप्रकाश 'शील'
सुनाओ नानी एक कहानी	धर्मपाल गुप्ता

ISBN 81-908018-5-6

9 788190 801850

रवीन्द्र प्रेस